गूदड़ साईं

जयशंकर प्रसाद

गतिविधि:-

छात्रों को निन्मलिखित प्रसिध्द व्यक्तियों के चित्र दिखाकर उनसे सवाल करना:

१. सरदार पटेल
२. विवेकानन्द
३. नेहरू
४. सुभाषबाबू
५. गांधी जी

सवाल:-

१. सबसे अलग पहनावा किसका है?
२. क्या आप जानते हैं गांधीजी ने इस तरह की पोषाख पहनना क्यों पसंद किया?

प्रस्तावना:-

छात्रो, क्यों? आपने सभी चित्रों को बारीकी से देखा ? एक बात समझ में आई?इनमें से हर एक की पोषाक की कुछ न कुछ खासियत है- और हाँ ------ गाँधी जी के पोषाक देखकर तो आप सोचते होंगे – इनकी पोषाक इतनी अलग क्यों ?

सच कहे तो सीदा-साधा रहन-सहन और उच्च विचार.....

<u>उद्देश्य:-</u>

कई बात हम जो देखते हैं उस दृश्य के पीछे रहनेवाली सच्चाईहमें दंग कर देती है | हमने सोचने पर मजबूर कर देती है |
ऐसा कुछ हुआ है "गुदड़साईं" के साथ.....

<u>सारांश:-</u>

- एक बैरागी है | दिखने में भीखमंगे की तरह – अपने पास फटी गुदड़ी के चीथड़े रखनेवाला ! बच्चों से बहुत प्यार करता है | उन्हें भगवान का रूप मानकर उनके साथ हँसी-मज़ाक करके आनन्द पाने वाला है | यह साईं-बैरागी-सब इसे गुदड़साईं कहते थे |
- मोहन एक सात-आठ साल का लडका है | जब भी वह साईं को देखता था- उसे भीखमंगा समझकर कुछ न कुछ देता था | घरवालों कि इस बात का पता न चले- शायद वे पसंद न करें तो? यह मानकर ! एक अनोखा तरल रिश्ता दोनों में तैयार हो रहा था | निष्पाप-निरागस-पवित्र |
- एक दिन वही हुआ जिसका डर था.....
- मोहन के पिताजी ने यह सब देख लिया | पहले से ही ऐसे ढोंगी-बैरागी-क्कीरों से वे चिढ़ते थे | अब उन्होंने साईं को डांटा और बच्चों से न मिलने के लिए कहा| नतीजा यह हुआ कि—
- साईं और मोहन की भेंट बंद हुई | साईं ने ही बंद किया मोहन से मिलना – अचानक एक दिन-
- मोहन को साईं दिखाई दिए-
- उससे रहा नहीं गया | उसने साईं को घरपर बुलाया | इतने में---------
- एक नटखट बच्चा साईं से उसकी गुदड़ी छीनकर भागने लगा | साईं भी उसके पीछे भागने लगा---- पर दुर्भाग्यवश साईं ठोकर खाकर गिर पड़ा | उसके सर से खून बहने लगा बच्चा डर गया | मोहन के पिता ने उसे पकड़ लिया – आस-पास के लोग बच्चे को मारने लगे .... परन्तु.....

- मत मारो बच्चे को !!! मत मारो---- साईं बिनती करता रहा ..... मोहन के पिताजी सुनकर हैरान रह गए .....
- आखिर तुम्हारी गूदड़ी लेकर भाग रहा था वह!!! तुम उसे क्यों बचाना चाहते हो? अपने सर से खून बहा फिर भी तुम रोए नहीं और अब जब बच्चे को मार पद रही है तब तुम रोने लगे!! अजूब बात है!!!
- साईं के उत्तर को सुनके मोहनके पिता अचरज में दीब गए क्योंकि साईं ने कहा –" मेरे इस गूदड़ी को छीनना तप केवल भगवान जानते हैं और मैं इन जीते-जागते भगवानों के पीछे भागना----- दिल बहलाना जानता हूँ .... बस!!!!
- छोटे-छोटे निष्पाप बालकों में भगवान के दर्शन करने वाले साईं ने मोहन के पिताजी की आँखें खोल दीं- उन्होंने कहा तुम "गूदड़साईं" नहीं "गूदड़ी के लाल" अर्थात छीपे हुए मूल्यवान हीरे हो |